Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-2 'काकी' (कहानी) लेखक - सियारामशरण गुप्त

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या 10 पर दिए पाठ-2 'काकी' का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पाठ-2 का आरंभ करने जा रहे हैं। इसलिए आप अपनी-अपनी पुस्तक 'साहित्य सागर' निकाल लें और पृष्ठ संख्या 10 खोल लें। साथ ही अपने पास साहित्य की उत्तर-पुस्तिका भी लेकर बैठें। पाठ को समझाते-समझाते आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनेंगे व समझेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

सियारामशरण गुप्त जी की कहानी 'काकी' एक अबोध बालक की स्थिति को दर्शाती हुई अत्यंत मार्मिक कहानी है। कहानी का मुख्य उद्देश्य मासूम बच्चे की संवेदनशीलता तथा माँ से बच्चे का अत्यधिक प्रेम दर्शाना है। बच्चों का मन अत्यंत कोमल होता है, वह घटनाओं को अपने हिसाब से समझकर समाधान निकालना चाहते हैं। माँ का दूर रहना वे सहन

नहीं कर पाते हैं। अत: एक बालक के मनोविज्ञान और मातृ-वियोग की पीड़ा को दर्शाना ही लेखक का उद्देश्य है।

'काकी' कहानी के मुख्य पात्रों में श्यामू, विश्वेश्वर, तथा भोला हैं। जवाहर तथा श्यामू के भैया अन्य पात्र है। आइए, कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण भी जान लेते हैं।

1. श्यामू - श्यामू 'काकी' कहानी का मुख्य पात्र है। वह अबोध (नासमझ) बालक है। वह बालक अपनी माँ से बहुत प्यार करता है। वह मृत्यु के सच से अनजान है। माँ को भूमि पर नीचे से ऊपर तक कपड़ा ओढ़े सोते देखकर उसे आभास नहीं हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई है। वह भावुक और संवेदनशील है। अपनी उम्र और समझ के अनुसार वह अपनी माँ को राम के घर से वापस लाने की योजना भी बनाता है।

2. विश्वेश्वर - विश्वेश्वर श्यामू के पिता हैं। पत्नी की असमय मृत्यु से वे उदास और अन्यमनस्क रहते हैं। (जिसका मन कहीं और लगा हो) उदासी के कारण वे श्यामू की पतंग लाने वाली बात को टाल जाते हैं। वह पुत्र के प्रति जिम्मेदारी भी समझते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि श्यामू ने उनके कोट से पैसे चुराए हैं तब वे क्रोधित होकर उसे तमाचे लगाकर डाँटते भी हैं। पतंग लाने का कारण पता चलने पर वे हतबुद्धि होकर खड़े रह जाते हैं।

3. भोला - भोला श्यामू का मित्र है। वह सुखिया दासी का पुत्र है। वह श्यामू का हमउम्र है। भोला, श्यामू से अधिक समझदार है। इसलिए वह पतंग की पतली डोर टूट जाने के भय से श्यामू को मोटी रस्सी मँगवाने का सुझाव देता है। वह डरपोक भी है। विश्वेश्वर की एक डाँट से डरकर वह साश सच उगल देता है।

बच्चो! अब कहानी को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। एक सवेरे श्यामू नींद से जगा तो उसने देखा कि घर में कुहराम मचा हुआ है। उसने देखा कि उसकी काकी (माँ) नीचे से ऊपर तक एक सफ़ेद

कपड़ा ओढ़े हुए भूमि पर सो रही थी। घर के सब उनके चारों तरफ़ बैठे रो रहे हैं। वास्तव में श्यामू की माँ की मृत्यु हो चुकी थी। कुछ देर बाद जब लोग उसकी माँ को उठाकर श्मशान ले जाने लगे तो श्यामू ने माँ को ले जाने से रोकने के लिए बहुत उपद्रव मचाया। श्यामू ने उनसे पूछा कि मेरी काकी सो रही है, उन्हें कहाँ ले जा रहे हो? उसने यह भी कहा कि वह उन लोगों को इस प्रकार अपनी माँ को ले जाने नहीं देगा। लोगों ने श्यामू को बहुत कठिनाई से वहाँ से हटाया। श्मशान से लौटकर कुछ बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी मामा के यहाँ गई है, कुछ दिनों में वापिस आ जाएँगी। परन्तु असत्य के आवरण में यह सत्य अधिक समय तक छिपा न रहा। अर्थात् थोड़े ही दिनों में उसे पता चल गया कि उसकी काकी ऊपर राम के यहाँ गई है। यह जानकर श्यामू पहले तो कई दिनों तक लगातार रोता रहा। कुछ दिनों बाद श्यामू के आँसू तो थम गए अर्थात् रोना तो शांत हो गया परन्तु मन में जो दुःख का भाव था, वह कम नहीं हुआ। इस बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने वर्षा का उदाहरण दिया है। वर्षा होने के बाद एक-दो दिन तक पृथ्वी के ऊपर पानी दिखाई देता है फिर वह पानी ऊपर तो दिखाई नहीं देता लेकिन पृथ्वी के अंदर उसकी नमी बनी रहती है। उसी प्रकार दुःख प्राप्त होने पर कुछ दिन तो वह दुःख आँसुओं में दिखाई देता है फिर आँसू तो सूख जाते हैं लेकिन दिल में दुःख स्थायी रूप से रह जाता है। ऐसे ही श्यामू का रोना तो क्रमशः शांत हो गया परन्तु उसका मन अत्यन्त दुःखी था। वह इस सच्चाई को सहन नहीं कर सका और एकदम चुपचाप रहने लगा। अब वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ही देखता रहता था। उसकी आँखों के आँसू सूख गए थे पर मन में गहरा दुःख समाया था। श्यामू एक भावुक हृदय का बालक था।

वह अपनी काकी से बहुत प्यार करता था। यही कारण था कि वह दिन-रात माँ की यादों में खोया रहता था।

एक दिन जब श्यामू ने आसमान में उड़ती पतंग देखी तो उसका हृदय प्रसन्नता से खिल उठा। वह इसलिए प्रसन्न था क्योंकि उस अबोध बालक को राम के घर से अपनी काकी को नीचे लाने का मार्ग मिल गया था। उसने सोचा कि वह पतंग पर 'काकी' लिखकर श्रीराम के घर भेजेगा और उसे पकड़कर उसकी काकी नीचे आ जाएँगी। इसी इच्छा को पूरी करने के श्यामू सबसे पहले अपने पिता जी के पास गया और उनसे एक पतंग मँगवाने की प्रार्थना की। पत्नी की मृत्यु के बाद विश्वेश्वर अन्यमनस्क रहते थे। किसी काम में उनका मन नहीं लगता था। इसलिए उन्होंने कह तो दिया मँगा दूँगा लेकिन मँगाना भूल गए।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोककर, उस समय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. घर के लोग करुण ढंग से विलाप क्यों कर रहे थे?
प्रश्न 2. काकी को ले जाते समय श्यामू ने क्या उपद्रव मचाया?
प्रश्न 3. आसमान में उड़ती पंतग देखकर श्यामू क्यों खुश हुआ?

बच्चो! विराम की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-

उत्तर 1. श्यामू की माँ का स्वर्गवास हो गया था, घर के सभी लोगों ने उसकी माँ को नीचे लिटाकर कपड़े से ढक दिया था उसकी माँ को चारों ओर से घेर कर विलाप कर रहे थे।

उत्तर 2. लोग जब श्यामू की काकी (माँ) को उठाकर ले जाने लगे तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह काकी के ऊपर जा गिरा और बोला काकी सो रही है, उसे कहाँ ले जा रहे हो?

उत्तर 3. आसमान में उड़ती पतंग देखकर श्यामू का हृदय

प्रसन्न हो गया। उसके मन में विचार आया कि क्यों न 'काकी' को पतंग के द्वारा ही नीचे उतारा जाए।

बच्चो! अब इस कहानी को पृष्ठ संख्या ग्यारह से समझने का प्रयास करते हैं। श्यामू पतंग पाने के लिए उत्सुक था। वह अपनी इच्छा को रोक न सका। उसके पिता का कोट एक खूँटी पर टँगा था, वहाँ एक स्टूल रखकर वह उस पर चढ़ गया और कोट की जेबें टटोलकर कोट की जेब से एक चवन्नी चुरा ली और अपने घर में काम करने वाली सुखिया दासी के लड़के भोला, जो उसकी बराबर की उम्र का था, अकेले में पतंग लाने को कहा। श्यामू ने भोला को अकेले में पतंग लाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि वह नहीं चाहता था कि जब भोला अपनी जीजी की सहायता से उसके लिए पतंग और डोर लेकर आए तो घर के किसी सदस्य को इस बात का पता न लग पाए। भोला के पतंग ले आने पर दोनों मिलकर पतंग में डोर बाँधने लगे तो श्यामू ने भोला को अपनी योजना के बारे में बताया कि वह इस पतंग को आसमान में इसलिए उड़ाना चाहता है ताकि उसकी काकी इस डोर के सहारे राम जी के यहाँ वापिस आ जाएँगी।

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। श्यामू की इस योजना में उसने सबसे बड़ी कमी यह पाई की पतंग में बाँधी जाने वाली डोर पतली है, जिसे पकड़कर उसकी काकी नीचे नहीं उतर सकतीं। काकी को उतारने के लिए मोटी रस्सी मँगवाने की आवश्यकता है। उसने श्यामू से कहा कि पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाएगा। भोला की यह सलाह श्यामू को उचित लगी लेकिन मोटी रस्सी मँगवाने के लिए सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी खरीदने के लिए वह दाम कहाँ से लाए। उसे लगा जो घरवाले उसकी काकी को बेरहमी से जला आए हैं। वे काकी को वापस लाने में उसकी सहायता नहीं करेंगे। इसी चिंता के कारण उसे पूरी रात नींद नहीं आई। पिछली बार की तरह अगले दिन भी श्यामू ने एकान्त पाकर स्टूल के सहारे खूँटी पर टंगे अपने पिता जी के कोट से एक रुपया निकाल लिया और उस रुपया को भोला को

देते हुए कहा कि वह उसे अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगवा दे। श्यामू अपने भाई जवाहर भैया से पतंग पर 'काकी' लिखवाना चाहता था। श्यामू लिखना नहीं जानता था इसलिए उसने एक कागज़ पर जवाहर भैया से पतंग पर लगाने के लिए काकी लिखवा लिया। क्योंकि 'काकी' के नाम की चिट होने पर पतंग उन्हीं के पास पहुँच जाएगी।

अगले दिन अँधेरी कोठरी में भोला और श्यामू बहुत खुश थे क्योंकि उन्हें पतंग तानने के लिए दो मोटी और मज़बूत रस्सियाँ मिल गई थीं। वे खुशी-खुशी पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। एक कागज़ के टुकड़े पर 'काकी' भी लिखवा लिया था कि अचानक विश्वेश्वर शुभ कार्य में बाधा की तरह उस अँधेरी कोठरी में घुस आए। उन्होंने कोट से रुपए निकालने के बारे में उन दोनों से धमकाकर पूछा तो भोला ने डर कर सब सच बता दिया। सच सुनकर विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़ दिए और बोले चोरी करना सीख कर जेल जाएगा। क्रोध में भरकर उन्होंने श्यामू के कान भी मल दिए। उन्होंने पतंग उठाई और फाड़ डाली। जब उन्होंने रस्सियों को देखकर पूछा कि ये किसने मँगवाई हैं तो भोला ने उन्हें बताया कि श्यामू पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे। भोला की यह बात सुनकर डाँटने वाले अर्थात् विश्वेश्वर हतबुद्धि से वहीं खड़े रह गए। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी तो उस पर चिपकाए हुए कागज़ पर 'काकी' लिखा हुआ था जिसे देखकर उनका सारा क्रोध काफ़ूर (गायब) हो गया। वे सोचने लगे कि मैंने अपने पुत्र को मारा जो कि अनजान और निर्दोष था। वह तो अपनी माँ को भूल नहीं पाया है। इस प्रकार क्रोध का स्थान अब पीड़ा ने ले लिया था।

बच्चो! आज हमारा यह पाठ समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने इसे रुचि से पढ़ा और समझा होगा। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से स्वयं करने का प्रयास करेंगे।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ -2 'काकी')

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"वर्षा के अनंतर एक दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी तो अगोचर हो जाता है, परन्तु भीतर ही भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंतराल में वह शोक जाकर बस गया था।"

प्रश्न (i) 'उसके' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? उसकी मनोदशा का वर्णन कीजिए।

प्रश्न (ii) 'असत्य के आवरण में सत्य बहुत दिनों तक छिपा न रह सका' - श्यामू को किस सत्य का कैसे पता चला ? इससे उस पर क्या असर पड़ा ?

प्रश्न (iii) 'काकी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न (iv) 'काकी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]